मेघ गर्जन केक

पैटरिशिया

मेघ गर्जन केक

पैटरिशिया

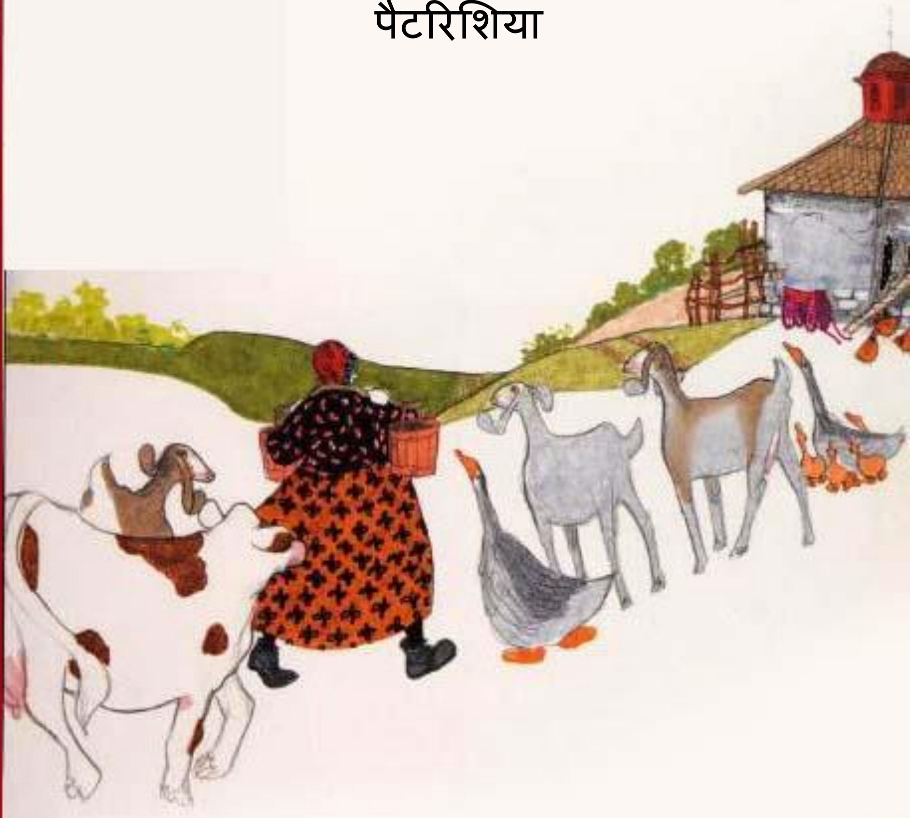

मिशिगन में स्थित मेरी नानी के फार्म में गर्मियों के उमस भरे दिनों में हवा में नमी बढ़ जाती है. तूफ़ान लाने वाले बादल खेतों के ऊपर झुक से जाते हैं. पक्षी भी धरती के निकट उड़ने लगते हैं. अचानक तेज़, कड़कड़ाती रोशनी से बादल एक पल के लिए चमकते हैं और फिर गर्जन की भीषण गड़गड़ाहट से खिड़कियाँ कांपने लगती हैं. जब मैं छोटी थी तब यह गर्जन मुझे भयभीत कर देती थी. मुझे नानी (नानी, जिसे मैं बबुश्का बुलाया करती थी, कई वर्ष पहले रूस से आई थी) के घर जाना अच्छा लगता था लेकिन मुझे मिशिगन के गर्मियों के तूफानों से डर लगता था. मुझे सबसे अधिक बादलों की गर्जन से डर लगता था. जैसे ही गरजते हुए बादल हमारे फार्म हाउस के निकट आते थे मैं बिस्तर के नीचे छिप जाती थी.

यह कहानी है कि कैसे मेरी नानी-मेरी बबुश्का-ने बादलों की गर्जन के डर को जीत पाने में मेरी सहायता की.

नानी ने क्षितिज की ओर देखा और गहरी साँस ली और कहा, “यह मौसम तो मेघ-गर्जन केक बनाने का है, ठीक. लगता है शीघ्र ही तूफ़ान आयेगा.”

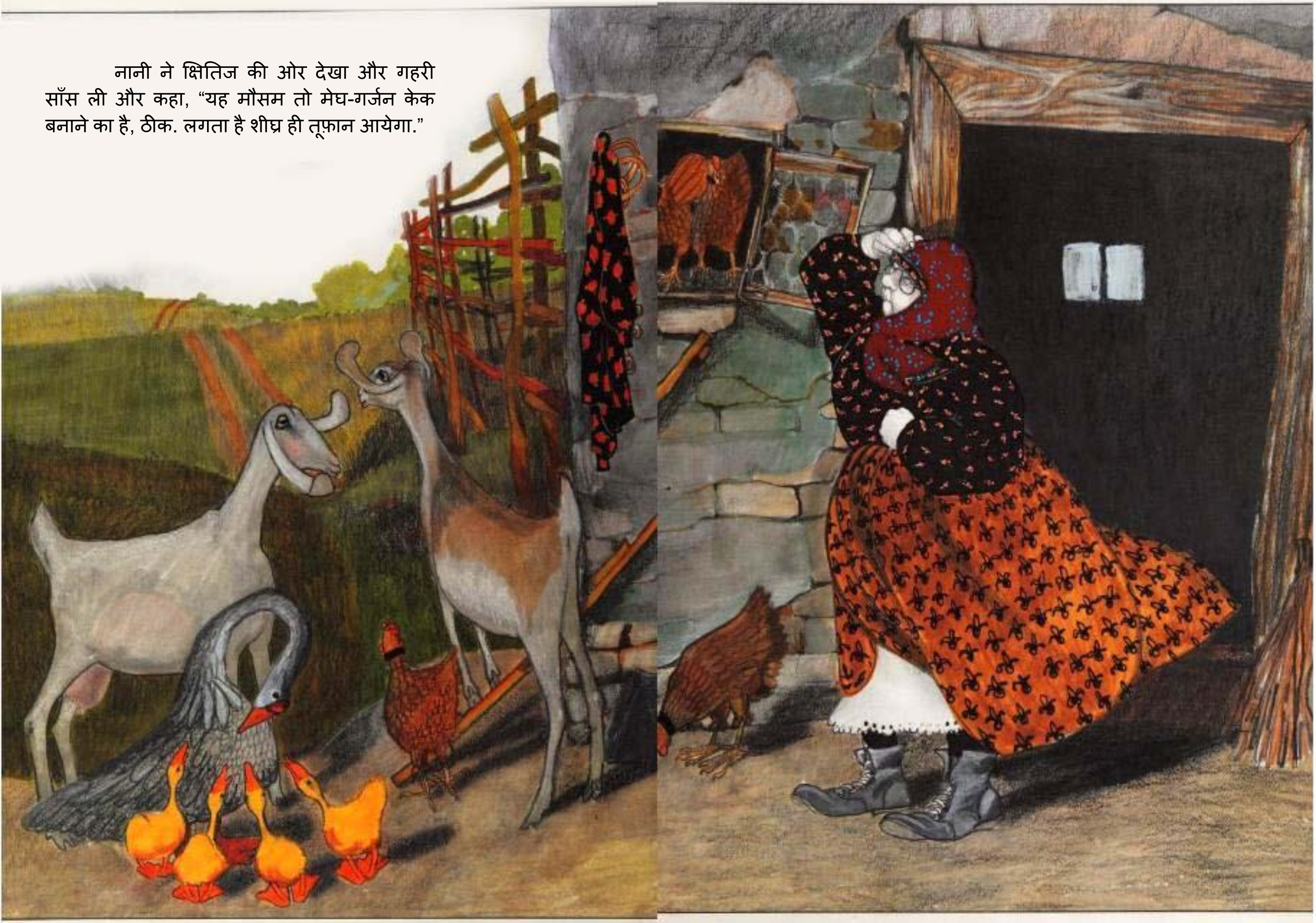

“बच्ची, बिस्तर के नीचे से बाहर आओ.
तुम्हें सिर्फ गर्जन सुनाई दे रही है,” नानी ने कहा.

हवा गर्म थी और नमी से भरी थी. बादलों की ज़ोरदार गड़गड़ाहट ने घर को हिला दिया, खिड़कियों को खड़खड़ा दिया और मैंने लपक कर नानी को पकड़ लिया और उनके साथ चिपक गई.

“धीरज करो, बच्ची,” नानी ने प्यार से कहा. “अगर तुम मुझे पकड़ कर रखोगी तो आज हम मेघ-गर्जन केक कैसे बना पायेंगे?”

“मेघ-गर्जन केक?” उन्हें और पास खींचते हुए मैंने हकलाते हुए कहा.

“सिर्फ इतना जानने के लिए कि तूफ़ान कितनी दूर है बादलों की गर्जन की ओर ध्यान दो, अन्यथा उसकी परवाह न करो. जब तुम्हें बिजली की चमक दिखाई दे तब गिनती गिनना शुरू कर दो....बहुत धीमे. जब गर्जन सुनाई दे, गिनना बंद कर दो. जिस संख्या तक तुम गिनोगी उतने ही मील दूर तूफान होगा. समझ आया?” नानी ने कहा. “हमें पता होना चाहिए कि तूफान कितनी दूर है ताकि तूफ़ान आने से पहले हम केक बना कर पकने के लिए तंदूर में रख दें, नहीं तो वह सही में मेघ-गर्जन केक न होगा.”

उन्होंने क्षितिज की ओर देखा जहाँ काले बादल दिखाई दे रहे थे. फिर वह किचन के अंदर गई. चूल्हे के ऊपर बने शेल्फ से एक मोटी किताब उन्होंने उठाई.

"चलो केक की रेसिपी ढूँढ़ते है, बच्चे," उन्होंने कहा और फिर किताब के चिकनाई के धब्बों से भरे पन्ने पलटने लगीं.

"यह रहा....मेघ-गर्जन केक!"

उन्होंने एक कागज़ पर केक की सारी सामग्री किताब से देख कर लिख ली. "चलो अब वह सारी चीज़ें इकट्ठी करते हैं जो हमें चाहियें!" पिछले दरवाज़े की ओर तेज़ी से जाते हुए उन्होंने ऊँची आवाज़ में कहा.

हम गोदाम के दरवाज़े के निकट आये ही थे कि आकाश में बड़े ज़ोर से बिजली चमकी. मैं गिनती गिनने लगी, जैसा कि नानी ने मुझे कहा था, “1-2-3-4-5-6-7-8-9-10.”

तभी गर्जन के आवाज़ सुनाई दी, धड़ाम!

“दस मील....दस मील दूर है,” नानी ने आकाश की ओर देखते हुए कहा. “मेरे विचार में तूफ़ान को यहाँ तक आने में अभी एक घंटा लगेगा. तुम्हें सब काम जल्दी करना होगा. वह अंडे ध्यान से इकट्ठे कर लो,” उसने कहा.

नेल्ली पैक मुर्गी के अंडे! मुझे मुर्गी से डर लगता था. मुझे पता था वह मुझे चोंच मारेगी.

“मैं यहीं हूँ. वह तुम्हें नहीं मारेगी. उसके अंडे ले आओ,” नानी ने धीमे से कहा.

बिजली दुबारा कड़की. “1-2-3-4-5-6-7-8-9” मैंने गिना.

“नौ मील दूर,” नानी ने मुझे याद दिलाया.

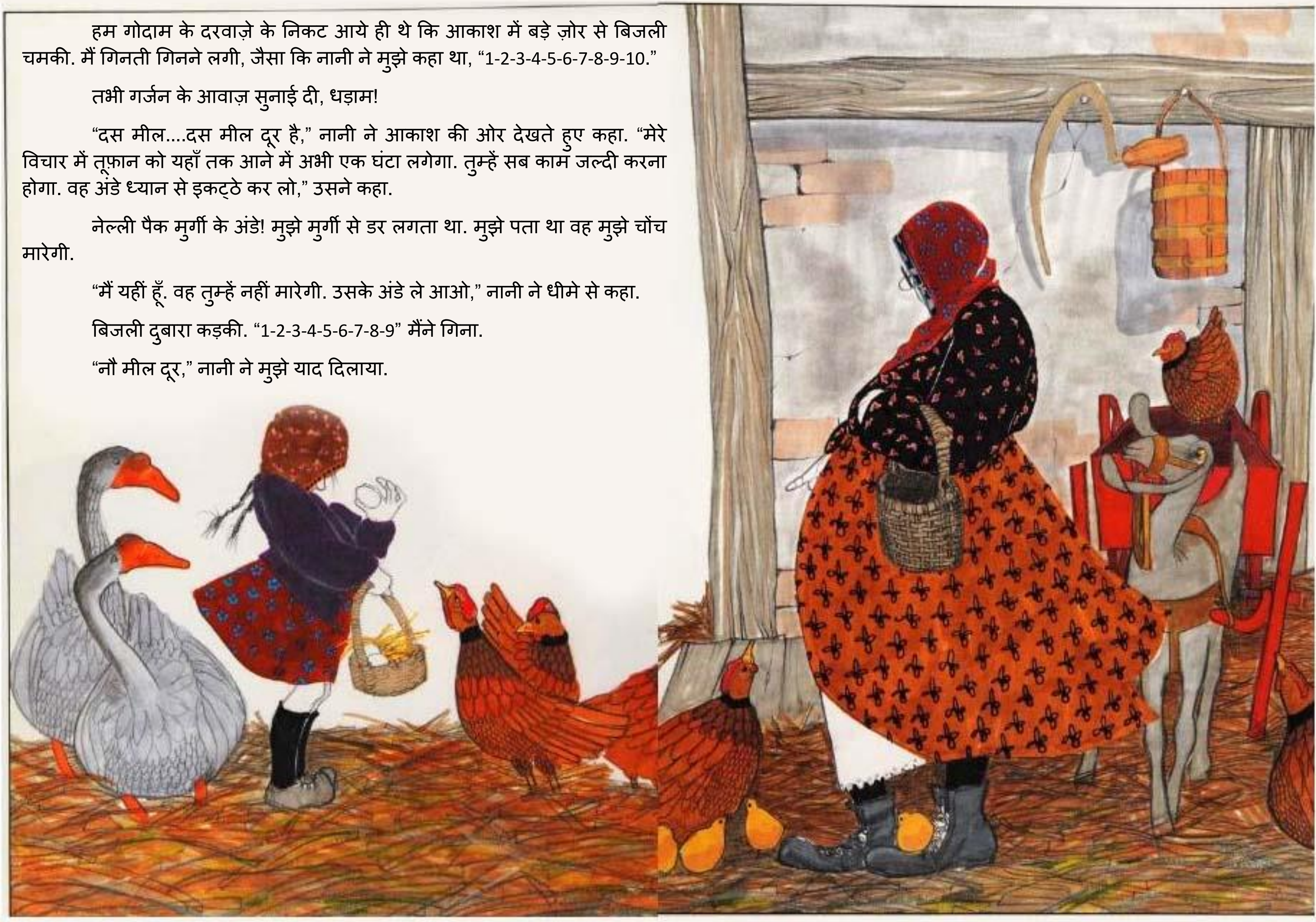

इसके बाद दूध की बारी थी. दूध किक गाय का लेना था. जब नानी गाय का दूध दुह रही थी, किक गाय घूमी और वह बहुत धृष्टता से मेरी ओर देख रही थी. मैं डर गई. वह बहुत बड़ी दिखाई दे रही थी.

सनसनाती हुई बिजली चमकी. “1-2-3-4-5-6-7-8” मैंने गिना.

धड़ाम बादल गरजे.

“आठ मील, बच्चे,” नानी ने कहा. “अब हमें ड्राई शेड से चॉकलेट और चीनी और आटा लेकर आना है.”

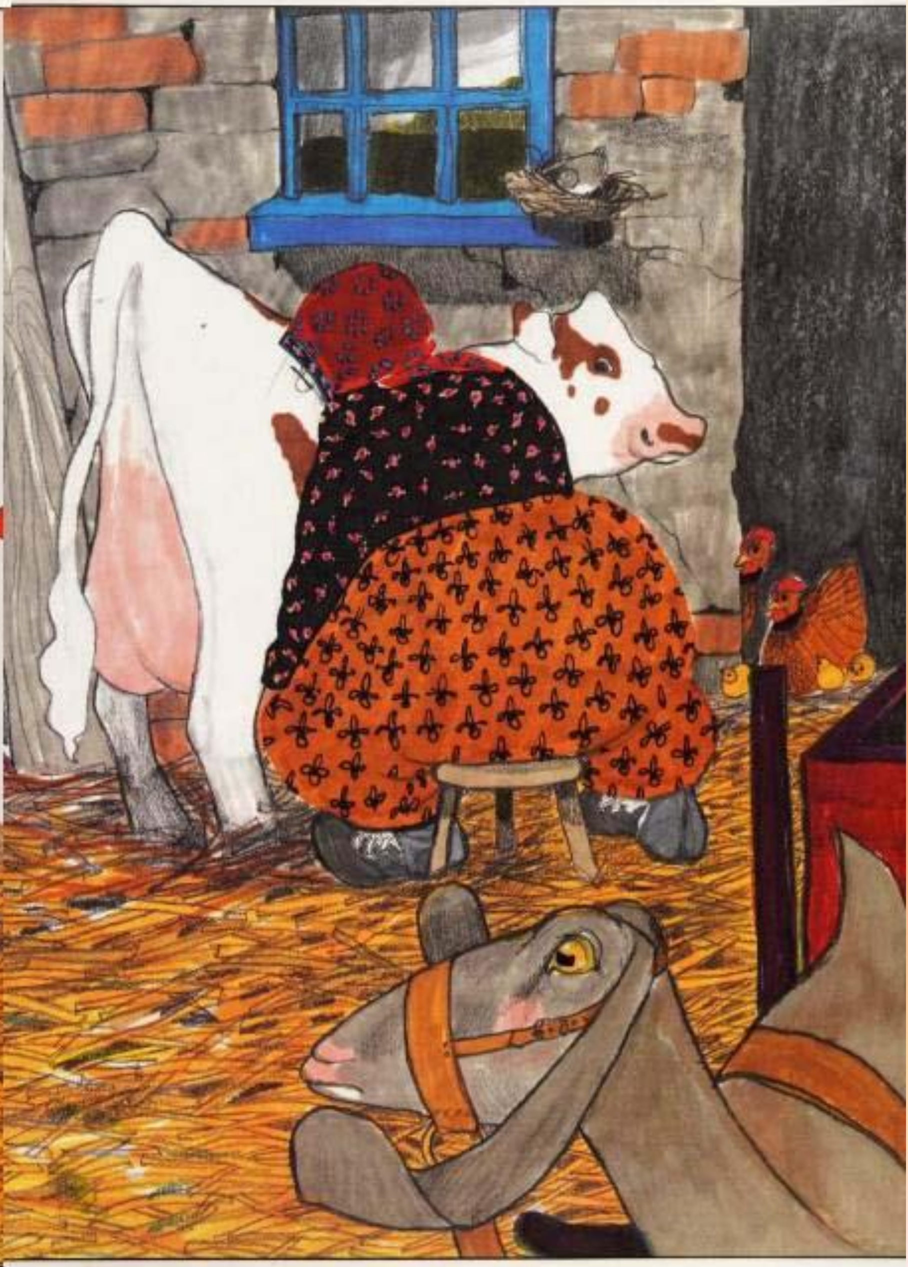

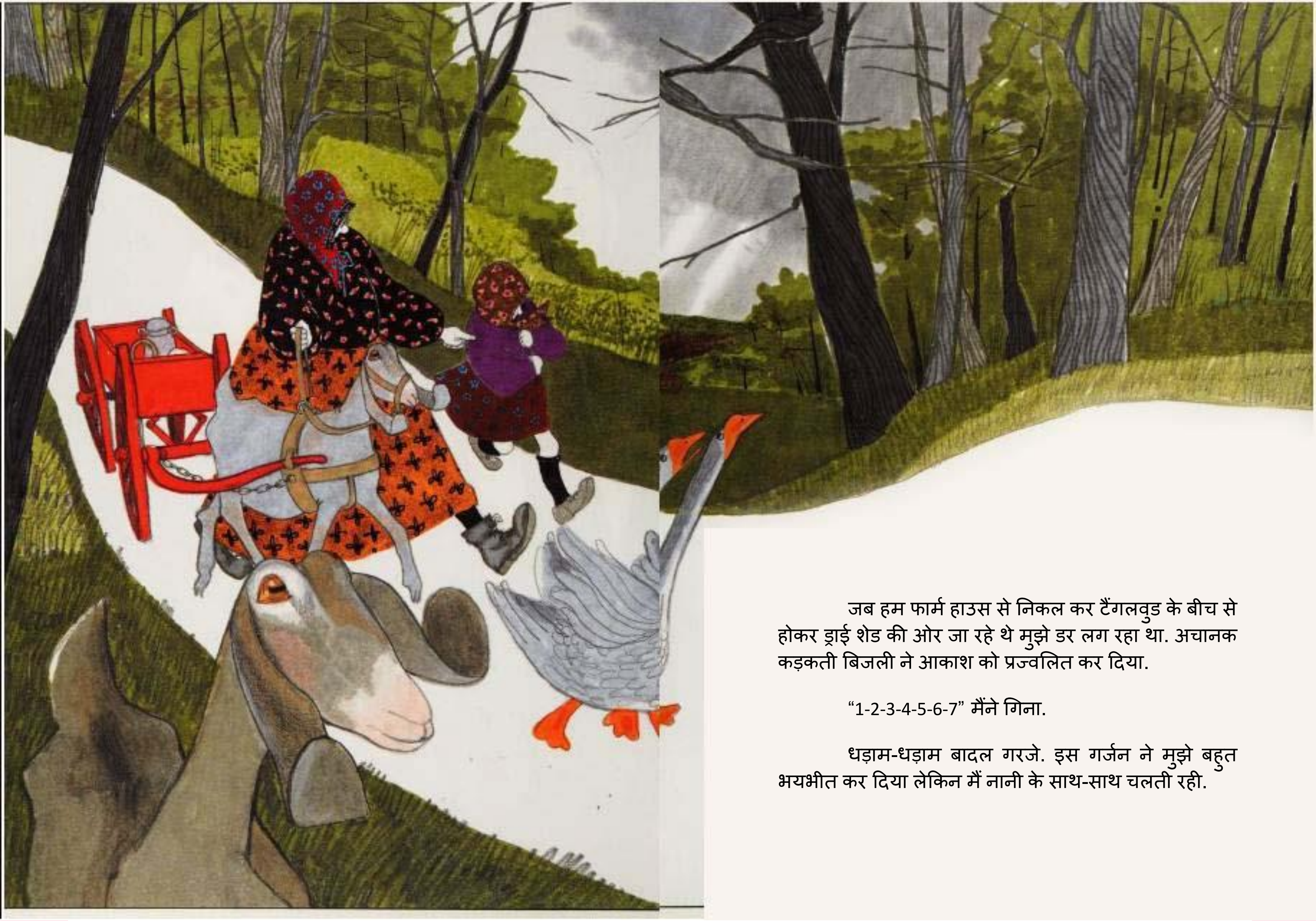

जब हम फार्म हाउस से निकल कर टैंगलवुड के बीच से होकर ड्राई शेड की ओर जा रहे थे मुझे डर लग रहा था. अचानक कड़कती बिजली ने आकाश को प्रज्वलित कर दिया.

“1-2-3-4-5-6-7” मैंने गिना.

धड़ाम-धड़ाम बादल गरजे. इस गर्जन ने मुझे बहुत भयभीत कर दिया लेकिन मैं नानी के साथ-साथ चलती रही.

जैसे ही मैं ड्राई शेड के अंदर जाने लगी आकाश में फिर बिजली चमकी. “1-2-3-4-5-6” मैंने गिना.

गड़-गड़ धड़ाम-धड़ाम, ज़ोर की गर्जन सुनाई दी. अँधेरा हो गया था और मैं भयभीत थी.

“मैं यहीं हूँ, बच्ची,” दहलीज़ पर खड़ी नानी ने धीमी आवाज़ में कहा. “जल्दी करो, हमारे पास अधिक समय नहीं है. गोपनीय सामग्री के अतिरिक्त हमारे पास सब कुछ है.”

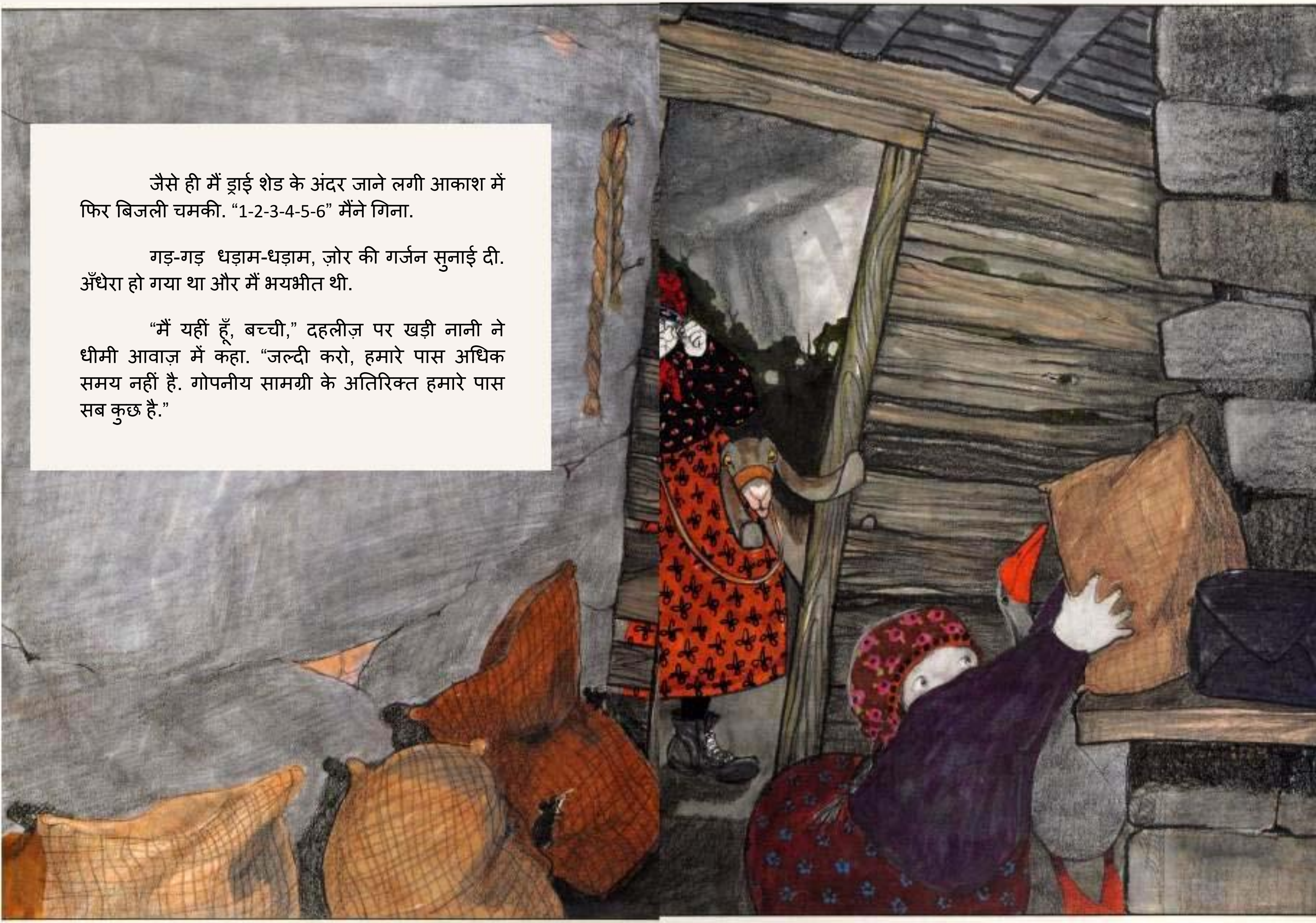

"तीन अधिक पके हुए टमाटर और थोड़ी से स्ट्रॉबेरी ," सामग्री की लिस्ट पढ़ते हुए नानी ने फुसफुसा कर कहा.

मैं जाफरी पर ऊपर तक चढ़ गई. ज़मीन बहुत नीचे दिखाई दे रही थी. मैं डरी हुई थी.

"मैं यहीं हूँ," नानी ने कहा. उनकी आवाज़ स्थिर और कोमल थी. "तुम नहीं गिरोगी."

मैंने तीन सुस्वादु टमाटर उठाये जब कि नानी ने स्ट्रॉबेरी इकट्ठी कर ली. फिर से बिजली कड़की.

"1-2-3-4-5" मैंने गिना.

गड़-गड़ धड़ाम-धड़ाम, बादल गरजे.

हम जल्दी-जल्दी घर वापस आये और किचन के अंदर आ गये. हमने सारी सामग्री नापी. उन सब चीज़ों को मिलाने के लिए मैंने उन्हें एक बाउल में डाल दिया. नानी ने सामग्री मिलाई. मैंने मक्खन निकाला और चॉकलेट पिघलाया. अंत में हमने लपसी को केक पैन में डाल दिया और उसे तंदूर के अंदर रख दिया.

कड़कती बिजली से किचन चमक उठी. मैंने तीन तक ही गिना था कि आकाश में भयंकर गर्जन हुई.

“तीन मील दूर ,” नानी ने कहा, “और केक पहले ही तंदूर में है. हम ने कर दिखाया. हमारा मेघ-गर्जन केक तैयार हो जाएगा!”

जब हम केक के बनने की प्रतीक्षा कर रहे थे, नानी देर तक खिड़की के बाहर देखती रही. “अरे, तुम्हें गर्जन से डर नहीं लगा. तुम बहुत बहादुर हो!” उसने मेरी ओर देखते हुए कहा.

“मैं बहादुर नहीं हूँ, नानी,” मैंने कहा. “मैं तो बिस्तर के नीचे छिपी थी, आपको याद नहीं?”

“लेकिन तुम बाहर आई,” नानी ने कहा. “तुम नेल्ली पैक मुर्गी के अंडे लेकर आई. तुम ने किक गाय का दूध लिया. तुम टैंगलवुड के बीच से होकर ड्राई शेड तक गई. तुम जाफरी के ऊपर चढ़ी. मेरी समझ में तो यह सब काम कोई बहादुर लड़की ही कर सकती है.”

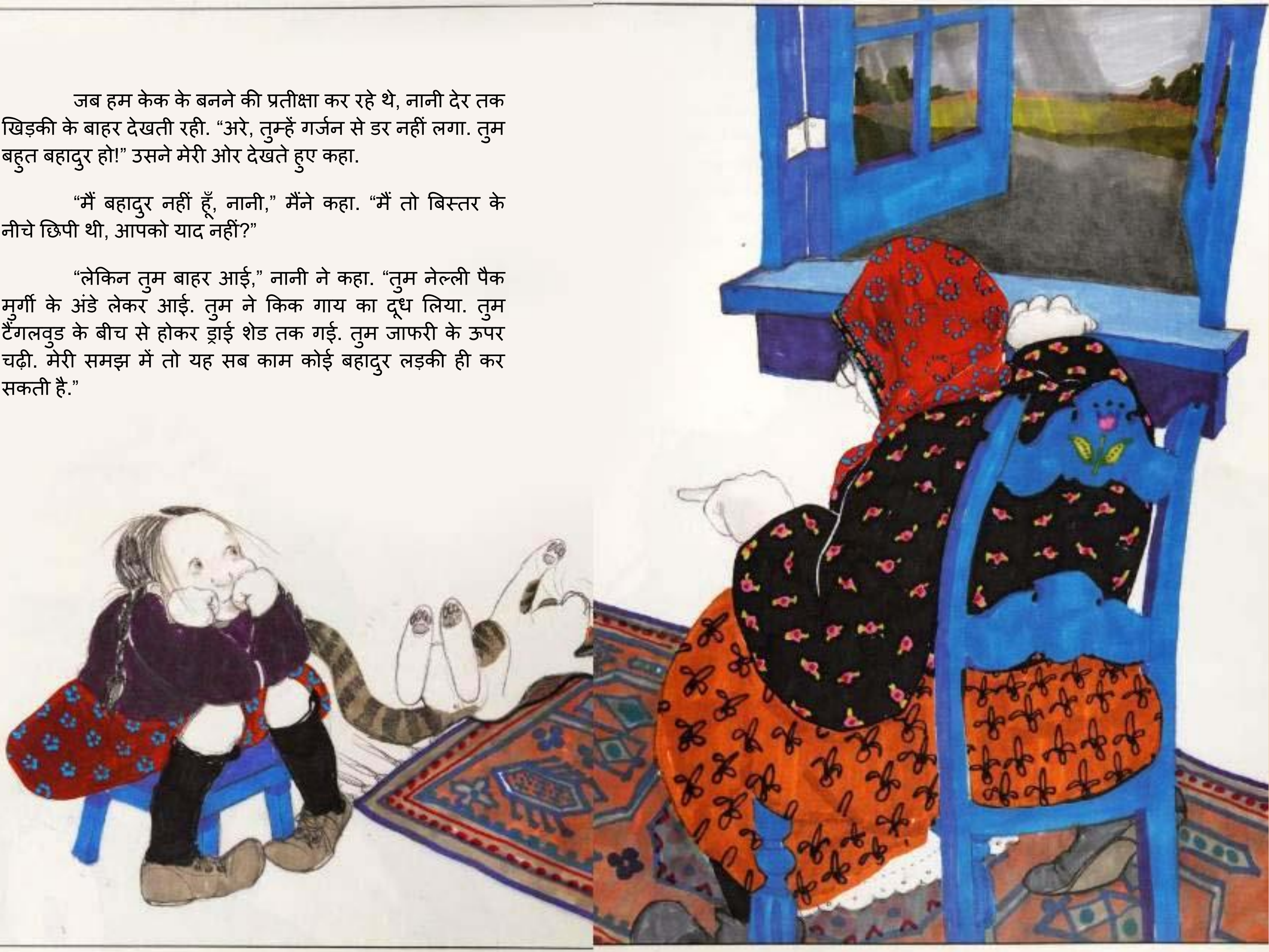

जैसे-जैसे तूफ़ान निकट आता गया मैं उनकी बात पर विचार करती रही, करती रही. वह ठीक कह रही थीं. मैं बहादुर थी.

“बहादुर लोग गर्जन से नहीं डरते.” उन्होंने कहा. उन्होंने मेज़ पर टेबल-क्लॉथ बिछाया और चीज़ें को उस पर सज़ा दिया. जब तैयारी हो गई हम किचन में आये, तंदूर से केक निकालने के लिए. जब केक ठंडा हो गया तो हमने उसकी सजावट की.

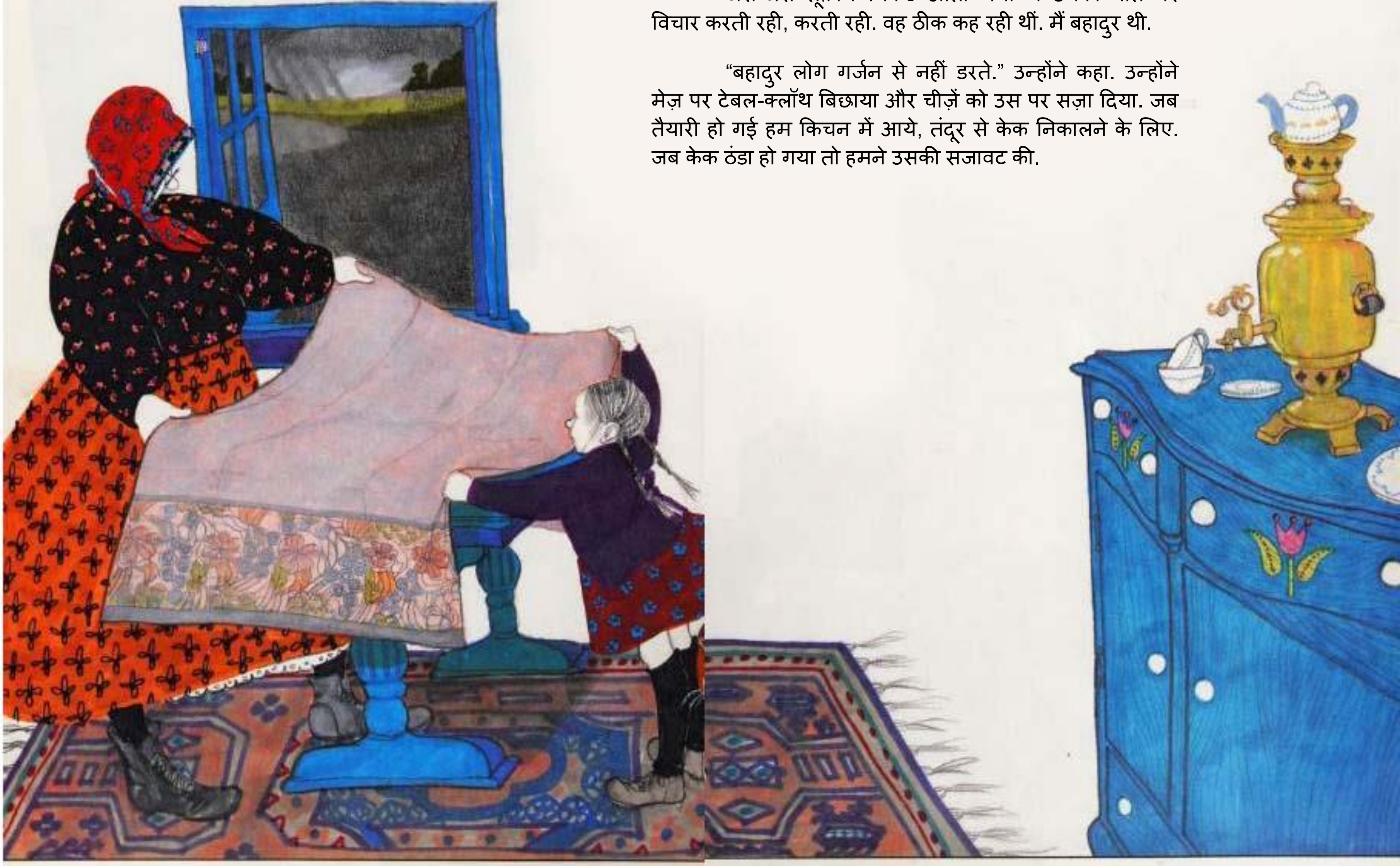

तभी बिजली कड़की और सारा आकाश चमक उठा.

बिजली की चमक अभी लुप्त ही हुई थी कि ठीक हमारे ऊपर बादल गरजने लगे, गड़-गड़ गड़-गड़ धड़ाम-बड़ाम. तूफ़ान आ पहुँचा था.

“बढ़िया,” नानी बोली. “बहुत बढ़िया,” मेघ-गर्जन केक पर चमकते हुए चॉकलेट के ऊपर अंतिम स्ट्रॉबेरी लगते हुए वह प्रसन्नता से मुस्करा रही थीं.

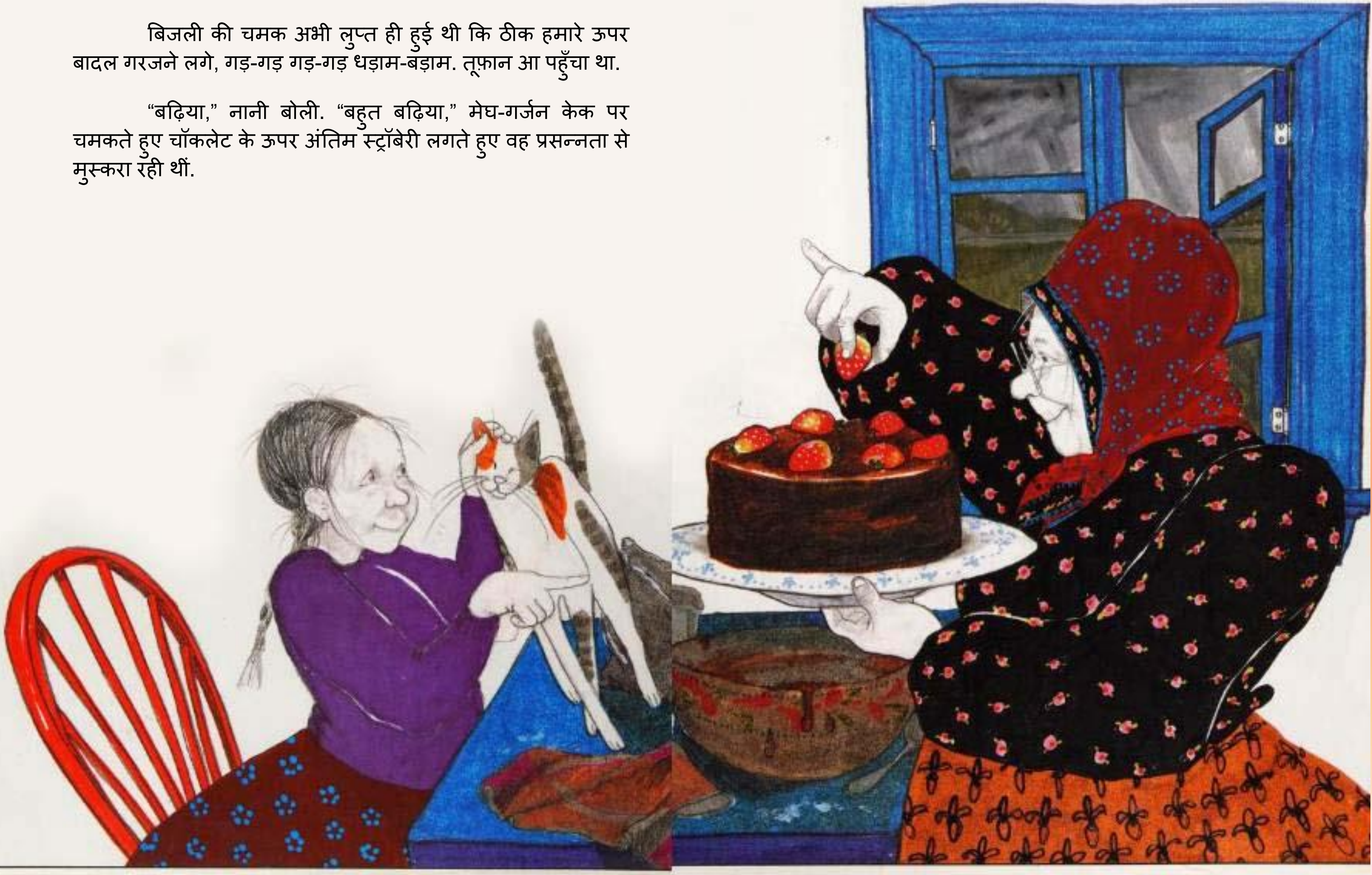

हमारी छत पर छमछम वर्षा हो रही थी. नानी ने केक का एक-एक तिकोना टुकड़ा हम दोनों के लिए काटा. समावार से उन्होंने गर्म-गर्म कॉफ़ी कपों में उंडेली.

जब फिर एक बार बिजली कड़की तो बादल इतनी ज़ोर से गरजे कि घर की खिड़कियाँ कांप गयीं और अलमारी में रखीं प्लेटें खड़खड़ाने लगीं, लेकिन हम मुस्कराते रहे और अपना मेघ-गर्जन केक खाते रहे.

उस दिन के बाद से बादलों की गर्जन सुन कर मैं कभी भी नहीं डरी.

समाप्त